Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 82-85

प्रबंध काव्य 'सूरजप्रकाश' में ऐतिहासिक तथ्य (राठौड़ राजवंश के प्रारंभ से राव रणमल तक के सन्दर्भ में)

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

हेमेन्द्र सिंह

शोधार्थी, राजस्थान अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत

सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

डिंगल साहित्य राजस्थानी साहित्यिक परंपरा की एक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट धारा है, जिसे मुख्यतः मध्यकालीन राजस्थान के चारणों, भाटों और दरबारी कवियों द्वारा रचा गया। डिंगल को केवल एक भाषिक माध्यम के रूप में समझना इसके व्यापक स्वरूप के साथ न्याय नहीं करता, क्योंकि यह साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक बोध का सशक्त आधार है। इसमें उस समय के सामाजिक ढाँचे, राजनीतिक परिस्थिति, सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक आदर्शों का प्रामाणिक प्रतिबिंब देखने को मिलता है। विशेष रूप से इतिहास लेखन की दृष्टि से डिंगल साहित्य में उपलब्ध विवरण मौखिक परंपरा, लोकस्मृति और प्रत्यक्ष अनुभवों का ऐसा अनूठा संगम प्रस्तुत करते हैं, जो राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायक होता है। आधुनिक समय में डिंगल साहित्य के महत्त्व को पुनः रेखांकित करने की आवश्यकता है ताकि इसे मात्र साहित्यिक अभिरुचि या अलंकारिक सौंदर्य तक सीमित न रखा जाए, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अनुसंधान के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जाए। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी बिंदु को ध्यान में रखते हुए महाकाव्य 'सूरज प्रकाश' में वर्णित ऐतिहासिक संदर्भों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह काव्य केवल काव्यगत कला-कौशल या अलंकारिक प्रयोगों का उदाहरण मात्र नहीं है, बल्कि इसमें तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं, राजनैतिक संघर्षों, वीरगाथाओं और सामाजिक मूल्यों का विस्तृत व सुसंगत वर्णन मिलता है। इस प्रकार 'सूरज प्रकाश' डिंगल साहित्य की ऐतिहासिक उपयोगिता को प्रमाणित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ सिद्ध होता है।

संकेताक्षर—*डिंगल साहित्य, सूरजप्रकाश, ऐतिहासिकता, मारवाड़, राठौड़*

प्रस्तावना

डिंगल काव्य की प्रमुख विशेषता इसका वीर रस प्रधान स्वरूप है, जिसके माध्यम से कवियों ने तत्कालीन राजाओं, युद्धों और सामाजिक मूल्यों का चित्रण अत्यंत ओजपूर्ण शैली में किया। इस साहित्यिक परंपरा में छंदबद्ध रचना, अलंकार योजना, और शब्दशक्ति का अत्यंत कलात्मक प्रयोग हुआ है। डिंगल कवियों ने समकालीन राजनैतिक संघर्षों, युद्ध प्रसंगों एवं नायकों के चरित्रों का जिस सजीवता और ऐतिहासिकता के साथ वर्णन किया है, वह अन्य भाषाओं में विरल है। इसका मुख्य कारण डिंगल के कवियों द्वारा स्वयं युद्ध भूमि में उपस्थित रहकर युद्ध करना और आँखों देखा हाल काव्यात्मक रूप से लिखना रहा है। इनमें घटनाओं का काल-क्रमानुसार विवरण, व्यक्ति विशेष की प्रशस्ति तथा उस समय की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों की झलक साफ दिखाई देती है।

वि.सं. 1787 में दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह की आज्ञा से महाराजा अभय सिंह द्वारा अहमदाबाद पर आक्रमण किया गया। गुजरात के तत्कालीन सूबेदार सर बुलंद खाँ स्थानीय पटेलों की सहायता से स्वतंत्र शासक बन बैठा था उससे अहमदाबाद को स्वतंत्र करवाने के लिए महाराजा अभय सिंह सैन्यदल के साथ अहमदाबाद पर हमला करते है जिसमें सर बुलंद खाँ

की करारी परास्त होती है। इस युद्ध में महाराजा अभय सिंह के साथ तीन चारण कवियों ने भाग लिया था, युद्ध पश्चात इस घटना को कविया करणीदान ने 'सूरजप्रकाश', वीरभांण रतनू ने 'राजरूपक' और बखता खिड़िया ने 'अभय सिंह जी रा कवित्त' के रूप में काव्यबद्ध किया।

पाठ प्राप्ति एवं पाठ परिचय

डिंगल के ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों में करणीदान कृत 'सूरजप्रकाश' का विशेष महत्व है। महाराजा अभय सिंह की अहमदाबाद विजय पर विरचित यह काव्य पद्मश्री सीता राम लालस के सम्पादन में राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित है। सीताराम लालस ने पाँच प्रतियों के उपयोग से पाठ संपादन का कार्य किया है। जिसमें मुख्य और आधार प्रति के रूप में शक्ति दान जी कविया बिराई से प्राप्त वि.सं. 1808 में लिखित प्रति को स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त चार अन्य प्रतियों का भी उपयोग किया है जिसमें से दो प्रतियाँ प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के संग्रह में संग्रहित थी, जिनके प्रतिलिपि का काल वि.सं. 1841 व वि.सं. 1884 है। अन्य प्रतियाँ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने के कारण संपादक के लिए अधिक उपयोगी साबित नहीं हुई परंतु पाठभेद की अवस्था में उनका उपयोग भी यदा-कदा किया गया है।

'सूरज प्रकाश' में वर्णित ऐतिहासिक तथ्य एवं उनका विश्लेषण

इस प्रबंध काव्य को सात प्रकरणों और साढ़े सात हजार छंदों के माध्यम से तीन भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में राठौड़ों के दशरथ पुत्र राम से संबंध, राजा पुंज के तेरह पुत्र दानेश्वर, अभयपुर, कपालिया, कुरहा, क्रमधज, बुगलाण, पारकेश, चंदेल, वीर, वरियावर, खैरवदा, जलखेड़िया, जयवंत, अहर से चली राठौड़ों की प्रमुख तेरह शाखाओं का विस्तृत वर्णन है। तत्पश्चात पुंज से महाराजा अभय सिंह तक की वंशावली का संक्षिप्त वर्णन है। राजा पुंज का पौत्र अभयचंद हुआ और अभयचंद का पुत्र विजयचंद हुआ जिसका पुत्र कन्नौज का प्रतापी राजा जयचंद हुआ जिसे विशाल सेना के कारण 'दलपुंगल' कहा जाता था। उसने अटक पार के मुस्लिम बादशाहों से लोहा लिया और उन्हें परास्त कर बंदी बना लिया। जयचंद का पुत्र वरदायीसेन और उसका बेटा सेन और सेन का सेतराम हुआ। इसी सेतराम का पुत्र राव सीहा हुआ जो मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक माना जाता है। सूरज प्रकाश के अनुसार राव सीहा कन्नौज से द्वारिका दर्शनार्थ गया और रास्ते में लाखा फुलाणी से युद्ध हुआ जिसमें लाखा फुलाणी, राव सीहा के हाथों मारा गया।[1] जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार राव सीहा ने अणहिलवाड़ा पाटण में जाकर मूलराज सोलंकी की कन्या से विवाह किया और लाखा फूलाणी पर चढ़ाई कर दी, जिसमें वि. सं. 1209 कार्तिक सुदी 7 (ई.स. 1152) को वह (लाखा) मारा गया।[2]

राव सीहा ने ज्येष्ठ पुत्र जसवंत सिंह को कन्नौज का राज्य सौंपकर उसने दस हजार की फौज अपने साथ लेकर रणछोड़ जी (द्वारिका) की यात्रा की। मार्ग में मूलराज सोलंकी ने उसका स्वागत किया और उससे लाखा फूलाणी को मारने का वचन लेकर अपनी कन्या का विवाह राव सीहा से कर दिया और वापस लौटते समय लाखा फूलाणी को मारकर उसने वचन निभाया।[3] नैणसी री ख्यात के अनुसार भी राव सीहा के हाथों लाखा फूलाणी का मारा जाना लिखा है।[4]

लाखा कच्छ के जाड़ेजा (जाड़ेजा, यादवों की एक शाखा) राजा फूल का पुत्र (फूलाणी) था। हेमचन्द्र के ''द्वयाश्रयमहाकाव्य'', गुजरेश्वर-पुरोहित सोमेश्वर-रचित ''कीर्तिकौमुदी'', मेरुतुंग की ''प्रबंध चिन्तामणि", अरिसिंह-विरचित ''सुकृत-संकीर्तन'' आदि प्राचीन ग्रन्थों से पता चलता है की लाखा फूला, राव सीहा का समकालीन नहीं वरन् सीहा की मृत्यु से 200 से भी अधिक वर्ष पूर्व सोलंकी मूलराज के हाथों मारा गया था। मूलराज ने सोरठ के राजा गृहरिपु पर जब चढ़ाई की उस समय गृहरिपु की सहायता के लिए लाखा गया था और वहीं उस संघर्ष में वह मारा गया। एक प्राचीन गुजराती कविता में वि. सं. 1036 (ई.स. 979) में आटकोट (सौराष्ट्र, दक्षिणी काठियावाड़) में उसका मारा जाना मिलता है[5] और कच्छ के प्राचीन काव्य में भी उसका मूलराज के हाथों से मारा जाना पाया जाता है।[6] ऐसी दशा में सीहा के हाथों से लाखा फूलाणी का मारा जाना सर्वथा असंभव है। लाखा फूलाणी बड़ा ही सम्पत्तिशाली और दानी राजा होने के कारण उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी और चारण, भाट आदि उसकी दानशीलता के कवित्त, दोहे आदि गाया करते थे। इस प्रकार उसका नाम प्रसिद्ध होने से, उसके मारे जाने की कथा सीहा के साथ जोड़ दी गई है जो कि पूर्णतः कपोल कल्पित है।

सूरजप्रकाश के अनुसार राव आसथान ने गोहिलों से युद्धकर खेड़ पर कब्जा किया।[7] जोधपुर राज्य की ख्यात[8] एवं दयालदास की ख्यात[9] में भी यही वर्णन मिलता है, 'बांकीदास की ख्यात' में भी इसका उल्लेख है।[10] परन्तु इनके विपरीत इन सब ख्यातों से पूर्व वि. सं. 1686 (ई. सं. 1629) का राठौड़ महारावल जगमाल के समय का नगर गांव से जो लेख मिला है, उसमें सीहा के पुत्र सोनिंग-द्वारा गोहिलों से खेड़ लिये जाने का उल्लेख है।[11] इससे यह प्रमाणित है कि खेड़ आस्थान ने नहीं, किन्तु उसके भाई सोनिंग ने विजय किया था।

आस्थान का पुत्र धूहड़ प्रतापी साबित हुआ। उसने कुलदेवी चक्रेश्वरी माता की मूर्ति नागाणा में स्थापित की और मंडोर के प्रतिहारों से संघर्ष किया जिसमें वह काम आया।[12] टॉड इस बात को स्वीकारते हैं[13] परंतु बांकीदास के अनुसार धूहड़ चौहानों के साथ युद्ध में मारा गया।[14] इस संदर्भ में स्पष्ट प्रमाण का अभाव है परन्तु पड़िहारों से राठौड़ों के संघर्ष की शुरूआत राव धूहड़ से ही मानी जाती है जो संघर्ष राव चुण्डा द्वारा मंडोर पर कब्जे के साथ समाप्त होता है। इसके अतिरिक्त राव धूहड़ के पुत्र रायपाल द्वारा मंडोर के पड़िहारों से अपने पिता का बदला लेने हेतु संघर्ष भी इस बात को इंगित करता है कि धूहड़ प्रतिहारों के साथ युद्ध में ही काम आया।[15] चौहानों से संघर्ष की साख बांकीदास के अतिरिक्त कोई नहीं देता है।

सूरजप्रकाश के अनुसार राव रायपाल के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र कनपाल (जिसे राव कानड़ भी कहा जाता है) शासक बना तत्पश्चात क्रमशः राव जालणसी, राव छाडा, राव तीडा उत्तराधिकारी बने।[16] इस ग्रंथ में इन सब के नामोल्लेख मात्र है। राव तीडा द्वारा भीनमाल के सोनगरा चौहानों को परास्त कर उनकी कन्याओं से विवाह करने का उल्लेख मिलता है।[17] राव तीडा का उत्तराधिकारी राव सलखा हुआ, सलखा का पुत्र राव वीरम हुआ जो जोइयों के साथ युद्ध में काम आया।[18] राव वीरम के जोइयों पर अभियान और जोइयों से वीरम के पुत्र गोगादेव द्वारा बदला लेने का विस्तृत वर्णन बादर ढाढी रचित 'वीरमायण' में है। राव वीरम का प्रतापी पुत्र राव चुण्डा हुआ जिसे उसकी दानवीरता के लिए 'चरूसुकाळ' के विरुद से जाना जाता था। राव चुण्डा ने प्रतिहारों से मंडोर प्राप्त किया और नागौर के मुसलमानों को हराकर नागौर पर कब्जा स्थापित किया।[19] इसी राव चुण्डा के चौदह पुत्र हुए जो राव कहलाए। राव चुण्डा का उत्तराधिकारी राव कान्हा हुआ और राव कान्हा की मृत्यूपरान्त उसका भाई राव सत्ता गद्दी पर बैठा परंतु 'सूरजप्रकाश' में इन दोनों के विषय में कुछ भी वर्णन नहीं मिलता है।

राव चुण्डा के बाद उसके पुत्र राव रणमल ने यश कमाया और उसने नाडोल को चौहानों से छीन लिया। चाचा और मेरा ने राणा मोकल की हत्या कर दी तत्पश्चात 'सूरजप्रकाश' के अनुसार राणा मोकल की मृत्यु पर राव रणमल को उसके भांजे कुम्भा ने अपने सहायतार्थ बुलाया।[20] जबकि राव चुण्डा की पुत्री हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से हुआ था अतः राव रणमल का भाणेज राणा मोकल था न कि राणा कुम्भा[21] राव रणमल ने मोकल का बदला लेने का संकल्प लिया और चाचा और मेरा को मारकर यश अर्जित किया। मेवाड़ के राज कार्य में बढ़ते रणमल के प्रभाव से नाखुश सिसोदिया सरदारों ने रणमल की हत्या कर दी।

निष्कर्ष

राजपूताने के इतिहास लेखन में प्राचीन राजस्थानी के ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों का उपयोग होता रहा है। परंतु कई इतिहासकारों ने इन्हें केवल अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा बताकर दरकिनार कर दिया है, जो कि पूर्णतः सत्य नहीं है। राजस्थान के कई इतिहासकारों ने 'सूरजप्रकाश' को संदर्भ के तौर पर उपयोग किया है। कर्नल टॉड व गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने मारवाड़ के इतिहास में महत्त्वपूर्ण संदर्भ के रूप में इसे स्वीकारा है।

'सूरजप्रकाश' के अध्ययन से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि कविया करणीदान ने भी पूर्व लिखित ऐतिहासिक ग्रंथों को आधार बनाकर वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त मारवाड़ की प्राचीन ख्यातों और मुहणोत नैणसी री ख्यात के आधार पर भी कई ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है। 'सूरज प्रकाश' में कविया करणीदान ने अपनी साहित्यिक मान्यताओं के प्रमाण हेतु संस्कृत के प्राचिन प्रसिद्ध कवियों, छन्द शास्त्रियों, व्याकारणाचार्यो एवं विद्वानों के कथन एवं संदर्भों का उपयोग किया है इसके अतिरिक्त करणीदान जी को जन में प्रचलित लोक कथाओं एवं किंवदंतियों की जानकारी थी इसी कारण ग्रन्थ में यत्र-तत्र इनको आधार बनाया गया है। जैसे कि राजा पुंज के 13 पुत्रों का वर्णन काल्पनिक होते हुए भी जनसाधारण में भी लोक कथाओं के रूप में प्रचलित है।

अतः इन सबके आधार पर यह निसंकोच कहा जा सकता है कि कवि ने 'सूरज प्रकाश' में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक

आधार हेतु संस्कृत प्राकृत एवं अपभ्रंश के कई ग्रंथों को आधार बनाया है। उपरोक्त शोध पत्र राठौड़ राजवंश के प्रतापी राजा रणमल तक के वर्णन पर ही आधारित है। भविष्य की योजना है कि इस सम्पूर्ण ग्रंथ का अध्ययन कर ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा प्रस्तुत की जाए।

सन्दर्भ सूची

1. करि मदत चावड़ां अचड़ कीध। लखपत फूलांणी मार लीध॥75॥

   सं. लालस, सीताराम, कविया करणीदान कृत सूरजप्रकाश, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ.सं. 236
2. सं. डॉ. सिंह, रघुवीर एवं राणावत, मनोहरसिंह, जोधपुर राज्य की ख्यात, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं पंचशील प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण, 1988, पृ.सं. 10-15
3. सं. शर्मा, दशरथ, दयालदास री ख्यात, अनुप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, प्रथम संस्करण 1957, भाग 1, पृ.सं. 39-41
4. सं. साकरिया, बदरी प्रसाद, मुंहणोत नैणसी री ख्यात, भाग 3, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, चतुर्थ संस्करण, 2014, पृ.सं. 29
5. अनु. बहुरा, गोपालनारायण, रासमाला, मंगल प्रकाशक, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1958, पृ.210
6. उपर्युक्त, पृ.सं. 212
7. सं. लालस, सीताराम, पूर्वोक्त, पृ.सं. 238-240
8. सं. डॉ. सिंह, रघुवीर एवं राणावत, मनोहरसिंह, पूर्वोक्त, पृ.सं. 16
9. सं. शर्मा, दशरथ, पूर्वोक्त, पृ.सं. 41
10. सं. स्वामी, नरोत्तमदास, बाँकीदास री ख्यात, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, तृतीय संस्करण, 2017, बात संख्या-12, पृ.सं. 3
11. डॉ. भंडारकर, ए लिस्ट ऑव् दि इन्स्क्रिप्शन्स ऑव् नॉर्दर्न इंडिया, संख्या 982
12. सं. लालस, सीताराम, पूर्वोक्त, पृ.सं. 240
13. टॉड, राजस्थान का इतिहास, अनु. कालूराम शर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर, चतुर्थ संस्करण, 2007, पृ.सं. 284
14. सं. स्वामी, नरोत्तमदास, पूर्वोक्त, पृ.सं. 3
15. सं. लालस, सीताराम, पूर्वोक्त, पृ.सं. 241
16. उपर्युक्त, पृ.सं. 241
17. उपर्युक्त, पृ.सं. 242
18. उपर्युक्त, पृ.सं. 243
19. उपर्युक्त, पृ.सं. 243-244
20. उपर्युक्त, पृ.सं. 245-247
21. पंडित रेउ, विश्ववेश्वर नाथ, मारवाड़ का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संशोधित संस्करण, 1999, पृ.सं. 70-72